पाठ ६ : प्रेमचंद के फटे जूते

लेखक :हरिशंकर परसाई

विषय : हिन्दी

कक्षा : नववीं

प्रस्तुतकर्ता : प्रतिभा रोकड़े

(परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय ३, तारापुर)

प्रेमचंद के फटे जूते

लेखक का परिचय

प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई का जन्म २२ अगस्त, सन १९२२ में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जनपद दे जमानी गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा गाँव में हुई। उन्होंने नागपुर से हिन्दी में एम.ए. किया और अध्यापन कार्य करने लगे। वे सन १९४७ से लेखन कार्य में जुट गए। उन्होंने जबलपुर से 'वसुधा'पत्रिका का प्रकाशन किया जिसकी काफी सराहना हुई। उनका निधन सन १९९५ में हो गया।

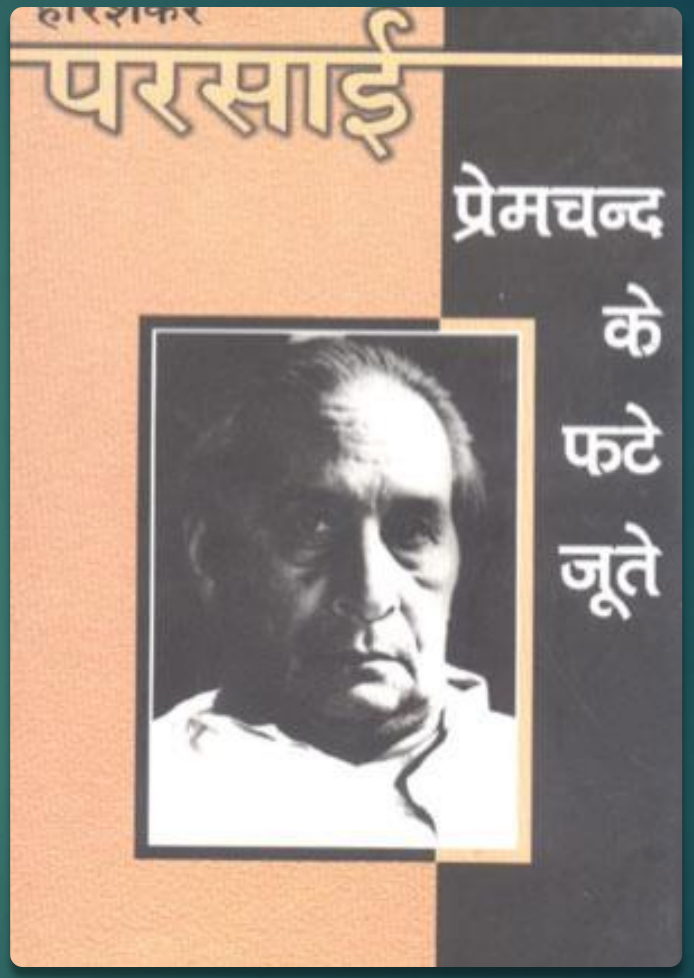

लेखक की शैली :

हरिशंकर परसाई ने सरस एवं सरल भाषा में व्यंग्यात्मक शैली में लेखन कार्य किया है| भाषा में हिन्दी,उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है| शब्दों का प्रयोग इतनी कुशलता के साथ किया है कि भाषा पाठक के मन को छू जाती है |इनकी हास्य एवं व्यंग्यात्मक शैली पाठक को बाँधे रखती है|

पाठ के विषय में :

प्रस्तुत पाठ में सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद जी की वेश-भूषा तथा उनके जूतों के माध्यम से एक ओर जहाँ प्रेमचंद के सादगीपूर्ण उच्च विचार को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है वही समाज की
स्वार्थपरता,अवसरवादिता,दिखावटीपन,दोगले चरित्र,धोखेबाजी की प्रवृत्ति पर करारी चोट की गई है|फोटो में प्रेमचंद के जूतों को देखकर ऐसा लगता कि सामाजिक बुराइयों से लड़ते-लड़ते ही उनके जूते की यह हालत हुई है|

- लेखक के सामने प्रेमचंद का एक फोटो है जिसमे वे अपनी पत्नी के साथ है |फोटो में वे कुरता-धोती तथा सिर पर टोपी लगाए हुए है|कनपटी चिपकी,गालों की हड्डियाँ उभरी तथा चेहरे पर घनी मूँछें है|पावों में केनवस के बेतरतीब बंद वाले जूते है,उसके बंद के लोहे की पतरी गायब हो गई है |उन्हें किसी तरह बाँध लिया गया है |बाएँ पैर का जूता फटा है,जिसमे से पैर की उंगली दिख रही है|लेखक सोचता है कियदि यह उनकी फोटो की पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी |

लेखक प्रेमचंद के जूते से अपने जूते की तुलना करते हर कहता है कि उसका भी जूता कोई अच्छा नहीं है|उपर से अच्छा दिखानेवाले जूते का तला घिसा हुआ अंगूठा घिसकर लहूलुहान हो गया है|तला घिसते-घिसते पूरा पंजा घायल हो जाएगा पर अंगुली नहीं दिखेगी| लेखक फोटो की ओर इशारा करता हुआ कहता है तुम्हारे पाँव सुरक्षित है पर अँगुली दिख रही है,मेरी अँगुली ढकी है,पर पंजा घिस रहा है|लेखक प्रेमचंद की मुस्कान के बारे में अलगअलग अनुमान लगाता है| लेखक सोचता है कि प्रेमचंद का यह जूता आखिर फटा कैसे?

लेखक अनुमान लगाता है कि यह तुम्हारी ऊँगली इशारा कर रही है|तुम जिसे घृणित समझते हो उसकी तरफ हाथ से नहीं पैर से इशारा करते हो| तुम अँगुली छिपाकर तलुआ घिसाए चलनेवालों पर हँस रहे हो क्योंकी ऊँगली भले ही बाहर निकली होपर पाँव तो बच रहा है| जिनका तलुआ घिस रहा है,वे चलेंगे कैसे? मै तुम्हारी इस व्यंग्य मुस्कान को समझ गया हूँ|

- प्रश्न 1.
हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्रं हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के चित्रं सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?
उत्तर-
'प्रेमचंद के फटे जूते' नामक व्यंग्य को पढ़कर प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं-
- **संघर्षशील लेखक-**
प्रेमचंद आजीवन संघर्ष करते रहे। उन्होंने मार्ग में आने वाली चट्टानों को ठोकरें मारीं। अगल-बगल के रास्ते नहीं खोजे। समझौते नहीं किए। लेखक के शब्दों में
"तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो। ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया।"
- **अपराजेय व्यक्तित्व-**
प्रेमचंद का व्यक्तित्व अपराजेय था। उन्होंने कष्ट सहकर भी कभी हार नहीं मानी। यदि वे मनचाहा परिवर्तन नहीं कर पाए, तो कम-से-कम कमजोरियों पर हँसे तो सही। उन्होंने निराश-हताश जीने की बजाय मुसकान बनाए रखी। उनकी नज़रों में तीखा व्यंग्य और आत्मविश्वास था। लेखक के शब्दों में–"यह कैसा आदमी है, जो खुद तो फटे जूते पहने फोटो खिंचा रहा है, पर किसी पर हँस भी रहा है।"
- **कष्टग्रस्त जीवन-**
प्रेमचंद जीवन-भर आर्थिक संकट झेलते रहे। उन्होंने गरीबी को सहर्ष स्वीकार किया। वे बहुत सीधे-सादे वस्त्र पहनते थे। उनके पास पहनने को ठीक-से जूते भी नहीं थे। फिर भी वे हीनता से पीड़ित नहीं थे। उन्होंने फोटो खिंचवाने में भी अपनी सहजता बनाए रखी।
- **सहजता-**
प्रेमचंद अंदर-बाहर से एक थे। लेखक के शब्दों में-''इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी-इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है।''
- **मर्यादित जीवन-**
प्रेमचंद ने जीवन-भर मानवीय मर्यादाओं को निभाया। उन्होंने अपने नेम-धरम को, अर्थात् लेखकीय गरिमा को बनाए रखा। वे व्यक्ति के रूप में तथा लेखक के रूप में श्रेष्ठ आचरण करते रहे।

प्रश्न 2.
सही कथन के सामने (✓) का निशान लगाइए-

बाएँ पाँव का जूता ठीक है मगर दाहिने जूते में बड़ा छेद हो गया है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।

लोग तो इत्र चुपड़कर फ़ोटो खिंचाते हैं जिससे फ़ोटो में खुशबू आ जाए।

तुम्हारी यह व्यंग्य मुसकान मेरे हौसले बढ़ाती है।

जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ अँगूठे से इशारा करते हो?

उत्तर-

✗

✓

✗

✗

प्रश्न 3.
नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए-
(क) जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।(ख) तुम परदे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुरबान हो रहे हैं।(ग) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?
उत्तर-
(क) जीवन में यह विडंबना है कि जिसका स्थान पाँव में हैं, अर्थात् नीचे है, उसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है। जिसका स्थान ऊँचा है, जो सिर पर बिठाने योग्य है, उसे कम सम्मान मिलता रहा है। आजकल तो जूतों का अर्थात् धनवानों का मान-सम्मान और भी अधिक बढ़ गया है। एक धनवान पर पच्चीसों गुणी लोग न्योछावर होते हैं। गुणी लोग भी धनवानों की जी-हुजूरी करते नजर आते हैं।

(ख) प्रेमचंद ने कभी पर्दे को अर्थात् लुकाव-छिपाव को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने वास्तविकता को कभी टॅकने का प्रयत्न नहीं किया। वे इसी में संतुष्ट थे कि उनके पास छिपाने-योग्य कुछ नहीं था। वे अंदर-बाहर से एक थे। यहाँ तक कि उनका पहनावा भी अलग-अलग न था।
लेखक अपनी तथा अपने युग की मनोभावना पर व्यंग्य करता है कि हम पर्दा रखने को बड़ा गुण मानते हैं। जो व्यक्ति अपने कष्टों को छिपाकर समाज के सामने सुखी होने का ढोंग करता है, हम उसी को महान मानते हैं। जो अपने दोषों को छिपाकर स्वयं को महान सिद्ध करता है, हम उसी को श्रेष्ठ मानते हैं।

(ग) लेखक कहता है-प्रेमचंद ने समाज में जिसे भी घृणा-योग्य समझा, उसकी ओर हाथ की अँगुली से नहीं, बल्कि अपने पाँव की अँगुली से इशारा किया। अर्थात् उसे अपनी ठोकरों पर रखा, अपने जूते की नोक पर रखा, उसके विरुद्ध संघर्ष किए रखा।

प्रश्न 4.
पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि 'फ़ोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी?' लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी।' आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?
उत्तर
मेरे विचार से प्रेमचंद के बारे में लेखक का विचार यह रहा होगा कि समाज की परंपरा-सी है कि वह अच्छे अवसरों पर पहनने के लिए अपने वे कपड़े अलग रखता है, जिन्हें वह अच्छा समझता है। प्रेमचंद के कपड़े ऐसे न थे जो फ़ोटो खिंचाने लायक होते। ऐसे में घर पहनने वाले कपड़े और भी खराब होते। लेखक को तुरंत ही ध्यान आता है कि प्रेमचंद सादगी पसंद और आडंबर तथा दिखावे से दूर रहने वाले व्यक्ति हैं। उनका रहन-सहन दूसरों से अलग है, इसलिए उसने टिप्पणी बदल दी।

प्रश्न 5.
आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन-सी बातें आकर्षित करती हैं?
उत्तर-
मुझे इस व्यंग्य की सबसे आकर्षक बात लगती है-विस्तारण शैली। लेखक एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ की ओर बढ़ता चला जाता है। वह बूंद में समुद्र खोजने का प्रयत्न करता है। जैसे बीज में से क्रमश: अंकुर का, फिर पल्लव का, फिर पौधे और तने का; तथा अंत में फूल-फल का विकास होता चला जाता है, उसी प्रकार इस निबंध में प्रेमचंद के फटे जूते से बात शुरू होती है। वह बात खुलते-खुलते प्रेमचंद के पूरे व्यक्तित्व को उद्घाटित कर देती है। बात से बात निकालने की यह व्यंग्य शैली बहुत आकर्षक बन पड़ी है।

प्रश्न 6.
पाठ में ‘टीले’ शब्द का प्रयोग किन संदर्भो को इंगित करने के लिए किया गया होगा?
उत्तर-
टीला शब्द ‘राह’ आनेवाली बाधा का प्रतीक है। जिस तरह चलते-चलते रास्ते में टीला आ जाने पर व्यक्ति को उसे पार करने के लिए विशेष परिश्रम करते हुए सावधानी से आगे बढ़ना पड़ता है उसी प्रकार सामाजिक विषमता, छुआछूत, गरीबी, निरक्षरता अंधविश्वास आदि भी मनुष्य की उन्नति में बाधक बनती है। इन्हीं बुराइयों के संदर्भ में ‘टीले’ शब्द का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 8.
आपकी दृष्टि में वेश-भूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?
उत्तर-
वेशभूषा के प्रति लोगों की सोच में बहुत बदलाव आया है। लोग वेशभूषा को सामाजिक प्रतिष्ठा का सूचक मानने लगे हैं। लोग उस व्यक्ति को ज्यादा मान-सम्मान और आदर देने लगे हैं जिसकी वेशभूषा अच्छी होती है। वेशभूषा से ही व्यक्ति का दूसरों पर पहला पड़ता है। हमारे विचारों का प्रभाव तो बाद में पड़ता है। आज किसी अच्छी-सी पार्टी में कोई धोतीकुरता पहनकर जाए तो उसे पिछड़ा समझा जाता है। इसी प्रकार कार्यालयों के कर्मचारी गण हमारी वेशभूषा के अनुरूप व्यवहार करते हैं। यही कारण है कि लोगों विशेषकर युवाओं में आधुनिक बनने की होड़ लगी है।

प्रश्न 9.
पाठ में आए मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
उत्तर-

- **हौसला पस्त करना –** उत्साह नष्ट करना।
  वाक्य – अनिल कुंबले की फिरकी गेंदों ने श्रीलंका के खिलाड़ियों के **हौसले पस्त कर दिए**।
- **ठोकर मारना –** चोट करना।
  वाक्य – प्रेमचंद ने राह के संकटों पर **खूब ठोकरें मारी**।
- **टीला खड़ा होना –** बाधाएँ आना।।
  वाक्य – जीवन जीना सरल नहीं है। यहाँ पग-पग पर **टीले खड़े हैं**।
- **पहाड़ फोड़ना –** बाधाएँ नष्ट करना।
  वाक्य – प्रेमचंद उन संघर्षशील लेखकों में से थे जिन्होंने **पहाड़ फोड़ना** सीखा था, बचना नहीं।
- **जंजीर होना –** बंधन होना।
  वाक्य – स्वतंत्रता से जीने वाले पथ की सब **जंजीरें तोड़कर** आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 10.
प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का उपयोग किया है उनकी सूची बनाइए।
उत्तर-
प्रेमचंद का व्यक्तित्व उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का प्रयोग किया है, वे हैं-

- जनता के लेखक
- महान कथाकार
- साहित्यिक पुरखे
- युग प्रवर्तक
- उपन्यास-सम्राट

शब्दार्थ:

कनपटी-कान के निकट का भाग

केनवस-मोटा कपड़ा जिससे जूते,थैला बनाए जाते है

बेतरतीब-बिना किसी ढंग के

पुरखे-पूर्वज

उपहास-मजाक उड़ाना

ट्रेजडी-जिसका अंत दुखद हो

युग प्रवर्तक-युग की स्थापना करनेवाला

लहुलुहान-घायल

ठाठ-शान

पन्हैया-जूते

उपजत-पैदा होता है

धन्यवाद